Q① ~~लोकतंत्र क्या~~

Q① लोकतांत्रिक राजनैतिक क्या है?

उत्तर:→ लोकतंत्र (शाब्दिक अर्थ "लोगों का शासन" संस्कृत में लोग, "जनता" तथा तंत्र, "शासन") या प्रजातंत्र एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता अपना शासक खुद चुनती है। यह शब्द लोकतांत्रिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक राज्य दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। यद्यपि लोकतंत्र शब्द का प्रयोग राजनीति के सन्दर्भ में किया जाता है, किंतु लोकतंत्र का सिद्धांत और संगठन के लिए भी संगत है। सामान्यतः लोकतंत्र विभिन्न सिद्धांतों के मिश्रण से बनते हैं, फिर मतदान के लोकतंत्र के अधिकांश प्रकारों का चरित्रगत लक्षण माना जाता है।

लोकतंत्र के प्रकार

लोकतंत्र की परिभाषा के अनुसार यह "जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन है।

Q① हर सामाजिक विभिन्नता सामाजिक विभाजन का रूप नहीं लेती कैसे?

Ans:- हर सामाजिक विभिन्नता सामाजिक विभाजन का रूप नहीं लेती। एक ही समाज या समुदाय में भिन्न जाति-धर्म के लोग रहते हैं। उनके रहन-सहन खान-पान और वेशभूषा - रिवाज भिन्न-भिन्न होते हैं। लेकिन जब उसी समाज में एक स्कूल, विद्यालय या अस्पताल बनवाने की बात होती है तो समाज के सभी तबके के लोग एक साथ सामने आते हैं।

भारत में मराठियों द्वारा उत्तर भारतीयों पर हमला किया गया। उत्तर-भारत के सभी लोग विभिन्न जाति-धर्म और लोग वाले के और विभिन्न कार्यों से यहां आये थे। सभी उत्तर भारतीयों पर हमला होना इस पुष्टि करता है हर सामाजिक विभिन्नता, सामाजिक विभाजन का रूप नहीं लेती।

Q② सामाजिक अंतर कब और कैसे सामाजिक विभाजन का रूप ले लेती है

Ans:→ किसी भी समाज में विभिन्न जाति-धर्म समुदाय के लोग रहते हैं जिनके रहन-सहन, खान-पान और रीति रिवाजों में अंतर पाया जाता है। जिसे हम सामाजिक अंतर कहते हैं।

जब कुछ सामाजिक अंतर अन्य अंतरों से बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं तो उस समाज के कुछ लोगों को ऐसा महसूस होने लगता है कि वे दूसरे समाज के हैं। ऐसी स्थिति में सामाजिक अंतर सामाजिक विभाजन का रूप ले लेता है। अपने देश में सवर्णों और दलितों का अंतर एक सामाजिक विभाजन है। क्योंकि सम्पूर्ण देश के दलित गरीबी, अशिक्षा और वंचित हैं जबकि सम्पूर्ण देश के सवर्ण सम्पन्न और सुविधा युक्त हैं। Note:→ अमेरिका में श्वेत और अश्वेत का अंतर सामाजिक विभाजन है।

Q③ "सामाजिक विभाजनों के राजनीति के परिणामस्वरूप ही लोकतंत्र के व्यवहार में परिवर्तन होता है", भारतीय लोकतंत्र के स्पष्ट सन्दर्भ में इसे स्पष्ट करें।

Ans:- यह बात बिल्कुल सत्य है कि सामाजिक विभाजन की राजनीति का ही परिणाम लोकतंत्र के व्यवहार पर पड़ता है। आजादी के बाद 1970 तक शासन पर सवर्णों का बोल-बाला रहा। इस अवधि में दलितों को अनदेखा की गई। 1970-90 तक सत्ता प्राप्ति के लिए सवर्ण और दलितों में संघर्ष चलती रही। इस दौड़ान लोकतंत्र में नई उथल-पुथल की स्थिति थी। 1990 के बाद पिछड़ी जातियों और दलितों में जागरिति आई। वे अपने उपस्थिति राजनीतिक गलियारों में दर्शाते रहे और

लोकतंत्र के व्यवहारों को प्रभावित करते हैं/
आधुनिक ~~[illegible]~~ संदर्भ में भारतीय राजनीति के इस महामंथन में पिछड़ा और दलितों का पलड़ा भारी होता दिखाई दे रहे हैं और, लोकतंत्र का व्यवहार भी दलित, पिछड़ों के विकास की ओर बढ़ रहा है/

Q(4) 70 के दशक से आधुनिक दशक के बीच भारतीय लोकतंत्र की सफर (सामाजिक नियाल के संदर्भ में) का संक्षिप्त वर्णन करें
Ans: →

Q. (5) भारत में विधायिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति क्या है?
Ans: → भारत के विधायिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति दयनीय है। सर्वप्रथम लोग सभा के स्थिति पर विचार करते/ 1952 से लेकर अबतक कुल 14 लोग सभा चुनाव में महिला प्रतिनिधित्वों की संख्या कभी भी 11% से अधिक नहीं हुई है/ वर्तमान में 59 महिला संसद हैं जिनका प्रतिशत 11 से नीचे है/ राज्य विधायिका में तो यह 5% से भी नीचे है/ कुल मिलाकर भारत में विधायिकाओं में महिलाओं का प्रतिशत Percentage 8% है/ यह अनुपात ब्रिटेन में 19.3 और अमेरिका में 16.3 है/

प्र. (16) किन्हीं दो, प्रावधानों को, जिनके कारण भारत को, धर्मनिरपेक्ष देश बनाता है Ans: हमारे संविधान में भारत को धर्मनिरपेक्ष देश घोषित किया गया है। इसको पीछे नीचे की गई है →

(i) हमारे देश में, किसी धर्म को राजकीय धर्म का दर्जा नहीं दिया गया है। इसके विपरीत श्रीलंका में बौद्ध-धर्म, पाकिस्तान में इस्लाम धर्म और इंग्लैंड में राजकीय धर्म का दर्जा प्राप्त किया गया है।

(ii) भारत में कोई भी व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार किसी भी धर्म को अपना सकता है। इसके लिए उन्हें किसी भी वर्जित से अलग नहीं किया जाएगा। संविधान द्वारा धार्मिक वैधम्भाव का सिद्धान्त घोषित किया गया है।

Teacher's Signature .....

~~सत्ता में~~

Q.5 सामाजिक विभाजनों की राजनीति का परिणाम किन-किन चीजों पर निर्भर करता है

उत्तर:→ (i) लोग अपनी पहचान व अस्तित्व तक ही सीमित रखना चाहते हैं क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में राष्ट्रीय चेतना के अलावे उपराष्ट्रीय या स्थानीय चेतना भी होती है। कोई एक चेतना अन्य चेतनाओं से उग्र होने लगती है तो समाज में असंतुलन पैदा हो जाती है। जैसे:→ जब तक बिहार बिहारियों के लिए, बंगाल बंगालियों के लिए, गुजरात गुजरातियों के लिए जैसी भावनाओं का अन्त नहीं होगा तब तक भारतीय एकता अखंडता और सामंजस्य खतरा में रहेगा।

(ii) दूसरा महत्वपूर्ण तत्व यह है कि किसी सम्प्रदाय या क्षेत्र विशेष की मांग को राजनीति दल कैसे उठा रहे हैं। जैसे:→ युगोस्लाविया राजनीतिक दलों ने वहां की क्षेत्र विशेष की मांगों को ठीक से नहीं उठाया। फलस्वरूप युगोस्लाविया टूट गया और टुकड़ों में बंट गया।

(iii) सामाजिक विभाजन की राजनीति का परिणाम सरकार के रुप पर निर्भर करता है। सरकार विभिन्न मांगों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखा रही है। अगर भारत में सरकार दलितों और पिछड़ों जैसे के मांगों को खारिज करती रहती है

तो उनाज भारत विखड़ाव के कगार पर होती है। लेकिन इन्हें द्वंद्व को सुरक्षापूर्ण ने जोड़ते हुए स्वतंत्रता में स्नाइंद्वारो बनाया गया। अन्ततः धौरे-धीरे स्नघर्ष के बावजुद भी भारतीय स्नमाज में स्नमरस्ता और स्नामंजस्य स्थापित है।

(6) — (घ) (8) — (च)
(7) — (ब) (9) (क) — (ब)
(ख) — (ङ)
(ग) — (स)

प्र. (10) भावी स्नमाज में लोकतंत्र की जिम्मेदारी और उद्देश्य पर स्नक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

Ans:→ अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को निम्न शब्दों में परिभाषित किया।

"प्रजातंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन की व्यवस्था है।"

प्रजातंत्र की यह स्नर्वमान्य परिभाषा है। प्रजातंत्र को जनता का केन्द्र बिन्दु बनाते हैं। अतः स्नुनुष्ठे लोकतंत्र के लिए यह स्नवश्यक जरूरी है कि जनता का स्नर्वांगिन विकास हो। इसके लिए स्नमाज में मौजुद विभिन्न स्नमस्या जैसे:→ गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, जाति प्रथा, क्षेत्रवाद, स्नम्प्रदायवाद आदि को दुर कर सम्पूर्ण देश का स्नमुचित विकास करना होगा। स्नवश्यक महत्वपूर्ण बात यह है कि, स्नत:- प्रतिशत जनता शिक्षित हो उसे

सही और गलत की परख हो वह सही प्रतिनिधियों का चुनाव करें, वह सही लोकतांत्रिक व्यवस्था को बहाल करें, समय-समय पर वह विभिन्न तरीकों द्वारा सरकार को उचित दिशा निर्देश देते रहें, सरकार को तभी हमारे सपनों की लोकतंत्र का उद्देश्य सफल हो सकता है।

Q. (11) भारत में किस तरह की जातिगत असमानता जारी है, स्पष्ट करें

Ans:- दुनिया भर के सभी समाज में सामाजिक असमानता और श्रम विभाजन पर आधारित समुदाय मौजूद है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। अन्य देशों की तरह भारत में भी पेशा का आधार वंशानुगत है। पेशा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में थोड़ा-बहुत चला आता है। पेशों पर आधारित समुदायिक व्यवस्था जाति कहलाती है। एक खास जाति समाज में दूसरे समुदाय या समाज में अपने पेशा के द्वारा समाज या समुदाय से भिन्न हो जाते हैं। इसकी पहचान इस रिवाजों द्वारा कर सकते हैं। समान पेशा वालें लोगों के बीच व्यवहारिक संबंध मिलते हैं। अतः भारत में श्रम या पेशा के आधार पर जातिगत असमानताएं जारी हैं। आज भी अनुसूचित व्यवहारिक संबंध अपने ही जाति में होता है। कानूनी छूट के बाद भी जातिगत असमानताएं जारी है।

प्र. (12) क्यों सिर्फ जाति के आधार पर भारत में चुनावी नतीजे तय नहीं हो सकते ? इसके दो कारण बताएं।

Ans:→ भारत में चुनावी नतीजे सिर्फ जाति के आधार पर तय नहीं होते हैं इसके कारण नीचे दिये गये हैं -

(i) किसी भी निर्वाचन क्षेत्र का गठन इस प्रकार किया जाता है कि उसमें एक से अधिक जाति के मतदाता रहें। हो सकता है कि एक जाति के मतदाता की सं० अधिक हो परंतु दूसरे जाति के मतदाता भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अतः हर पार्टी एक से अधिक जाति के लोगों का समर्थन हासिल करना चाहता है।

(ii) यदि कोई पार्टी किसी एक जाति का वोट हासिल कर सत्ता में आता है तो उस जाति को उस पार्टी का वोट बैंक कहा जाता है। ऐसी स्थिति में अन्य जातियां दूसरे दल के समर्थन में आती हैं।

प्र. (13) विभिन्न तरह की सामुदायिक राजनीति का ब्योरा दें। उनके लिये एक - एक उदाहरण दें।

Ans:→ जब धर्म ही समुदाय का निर्माण करने लगती है तो सांप्रदायिक राजनीति का जन्म होता है। इस अवधारणा पर आधारित सोच ही सांप्रदायिकता कहलाती है इसके कई रूपों को नीचे बताया गया है

Teacher's Signature .....

(i) सांप्रदायिकता की सोच प्रायः अपने धार्मिक समुदाय को मुख्य राजनीति में प्रतिनिधित्व करना चाहती है। जिस समुदाय के लोगों की संख्या अधिक होती है उसे बहुसंख्यक समुदाय कहते हैं और उनकी यह मानसिकता बहुसंख्यक वाद कहलाती है। जैसे:- श्रीलंका में सिंहलियों का बहुसंख्यक वाद

(ii) सांप्रदायिकता के आधार पर राजनीति गोलबंदी सांप्रदायिकता का दूसरा रूप है। इसके हेतु धर्म गुरुओं पवित्र चिन्हों और भावनात्मक अपीलों का सहारा लिया जाता है चुनाव के समय हम अक्सर ऐसा होते देखते हैं कि किसी खास धर्म के अनुयायी किसी खास पक्ष में वोट करते हैं।

(iii) सांप्रदायिकता का तीसरा रूप सबसे भयानक है। जब लोग समुदाय के आधार पर मार-पीट, दंगा फसाद करने लगते हैं तो इसे सांप्रदायिकता का तीसरा रूप उग्र सांप्रदायिकता कहलाता है। विभाजन के समय - हमने ऐसे त्रासदी झेली है। आजादी के बाद भी देश में कई सांप्रदायिक दंगे हुए हैं।

(iv) जीवन के विभिन्न पहलुओं का जिक्र करें जिसमें भारत में स्त्रियों के साथ भेदभाव है या वे कमजोर स्थिति में है

प्रश्न:- भारत में स्त्रियों के साथ भेदभाव है या उनकी संख्या जनक नहीं है

इन्हें निम्न तथ्यों द्वारा समझा जाता है।
(i) भारत में महिलाओं की साक्षरता दर कुल 65% है जबकि पुरुषों की 76% है। यद्यपि स्कूली शिक्षा में कई जगह लड़कियां अग्रणी रही हैं फिर भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों की संख्या बहुत कम है।
(ii) ऊंचे पद और ऊंचे तनख्वाह पर काम करने वाली महिलाओं की सं० बहुत कम है।
(iii) सर्वेक्षण के अनुसार महिलाएं प्रतिदिन औसतन 7 घंटे काम करती है। जबकि पुरुष औसतन प्रतिदिन 8 घंटे काम करते हैं फिर भी पुरुषों द्वारा काम की शिकायत होती है क्योंकि उससे किया गया परन्तु होती है।
(iv) लैंगिक भेदभाव का सबसे ज्वलंत पक्ष तब दिखाई देता है जब गर्भ में ही स्त्री भ्रूण की हत्या कर दी जाती है।

(17) — (B) (18) — (A) (19) — (D) (20) — (C)

(21) जाति
(1) → (C)
(2) → (B)
(3) → (A)
(4) → (D)